एम० ए० प्रथम वर्ष

द्वितीय प्रश्नपत्र- हिन्दी- साहित्य का इतिहास

द्वितीय सेमेस्टर

विषय :- रीतिकाल का नामकरण एवं प्रमुख प्रवृत्तियाँ :-

व्याख्यान द्वारा :-
डॉ० मंजू शुक्ला [Asst. Professor]
हिन्दी संकाय
नेहरू ग्राम भारती (मानित)
विश्वविद्यालय प्रयागराज उ०प्र०

Email ID:- drmanjushuklajaunpur@gmail.com

एम०ए० प्रथम वर्ष
द्वितीय प्रश्नपत्र हिन्दी साहित्य का इतिहास
द्वितीय सेमेस्टर

विषय – रीतिकाल का नामकरण एवं प्रमुख प्रवृत्तियाँ :-

व्याख्यान द्वारा
डॉ. मंजू शुक्ला (सहा० आचार्य) Asst. Professor
हिन्दी संकाय
नेहरू ग्राम भारती (मानित) विश्वविद्यालय प्रयागराज उ०प्र०

## रीति काल का नामकरण :-

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सम्वत् 1700 वि० से 1900 वि० (1643 ई० से 1843 ई०) तक के काल-खण्ड को रीतिकाल कहा है। मध्यकाल को जिन दो काल-खण्डों में बांटा गया है उनके नाम हैं – पूर्व मध्यकाल और उत्तर मध्यकाल। पूर्व मध्यकाल को भक्तिकाल और उत्तर मध्य काल को रीतिकाल कहा गया है।

रीतिकाल के लिए जो नाम दिये गए हैं वे इसप्रकार हैं:

1⇒ अलंकृत काल – यह नाम मिश्रबन्धुओं ने दिया है।
2⇒ शृंगारकाल → यह नाम विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने दिया है।
3⇒ रीतिकाल → यह नाम आचार्य राम चन्द्र शुक्ल ने दिया है।

मिश्र बन्धुओं का तर्क यह है कि इस काल में कविता को अलंकृत करने पर अधिक बल दिया गया है, इसलिए इसका नाम अलंकृत काल होना चाहिए, किन्तु इस काल में लक्षण ग्रंथो की रचना प्रचुर मात्रा में हुई है तथा अलंकृत काल कहने से इस प्रवृत्ति का बोध नहीं हो पाता अतः यह नाम समीचीन नहीं है।

शृंगार काल कहे जाने के पक्ष में यह तर्क दिया गया है कि इस काल के कवियों की व्यापक प्रवृत्ति शृंगार वर्णन की थी, किन्तु शृंगारी कवियों ने भी काव्यांग निरूपण की ओर रूचि — दिखाई है। ऐसी स्थिति में केवल शृंगार काल कहने से रीतिकाल की सम्पूर्ण कविता का बोध नहीं हो पाता।

SHOT ON MI A2
MI DUAL CAMERA
2020/4/15 07:00

काव्यांग चर्चा इस काल की सामान्य प्रवृत्ति थी और कविगण उसमें वैसा ही आनंद लेते थे जैसा भक्तिकाल में ब्रह्मज्ञान चर्चा में लिया जाता था। लक्षण ग्रन्थों का निर्माण दूसरों को काव्य रचना पद्धति का ज्ञान कराने के उद्देश्य से किया जाता था अर्थात ये कवि 'शिक्षक या आचार्य' की भूमिका का निर्वाह करने में गौरव का अनुभव करते थे।

रीतिकाल में 'रीति' शब्द का प्रयोग 'काव्यांग निरूपण' के अर्थ में हुआ है। ऐसे ग्रन्थ जिनमें काव्यांगो के लक्षण एवं उदाहरण दिए जाते हैं रीतिग्रन्थ कहे जाते हैं। रीतिकाल के अधिकांश कवियों ने रीति निरूपण करते हुए लक्षण ग्रंथ लिखे, अतः इस काल की प्रधान प्रवृत्ति 'रीति निरूपण' को माना जा सकता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कालो के नामकरण प्रधान प्रवृत्ति के आधार पर किए हैं। अतः रीति की प्रधानता के कारण इस काल का नामकरण उन्होंने रीतिकाल किया है। रीति से उनका तात्पर्य पद्धति, शैली और काव्यांग निरूपण से है।

रीतिकाल का प्रारम्भ चिन्तामणि कृत 'रस विलास' और मतिराम कृत 'रसराज' से माना जाता है, यद्यपि इनकी रचना 1633 ई० की है तथा रीतिकाल के अन्तिम कवि ग्वाल कवि जिनकी रचना रस रंग 1853 ई० के आस-पास की है। निष्कर्ष यह कि किसी काल का प्रारम्भ एक निश्चित तिथि से मानकर एक निश्चित तिथि पर उसे समाप्त मान लेना पूर्णतः तर्क संगत नहीं है।

## रीतिकाल की सामाजिक - सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि :-

(1) सामाजिक परिस्थितियां :→ उस समय समाज में दो वर्ग प्रधान थे उच्च-वर्ग तथा निम्न वर्ग उच्च वर्ग का सम्बन्ध राज दरबार समृद्ध जीवन से था अतः मुगल विलास की छाप उस पर भी पड़ी थी। तो दूसरी ओर गरीब जनता पिस रही थी। विलासिता की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण नारी

SHOT ON MI A2
MI DUAL CAMERA
2020/4/15 07:0

को सम्पत्ति माना जाने लगा। विलास के उपकरणों का संग्रह करना एवं सुरा-सुन्दरी में लीन रहना उच्च वर्ग के जीवन का एकमात्र लक्ष्य बन गया था। मध्यम वर्ग भी उन्ही के अनुकरण में लीन रहता था। किसी की कन्या का बलात् अपहरण कर लेना उच्चवर्ग के लिए सामान्य बात थी। निम्न वर्ग की दशा और भी शोचनीय थी। निर्धन कृषक मजदूर, तथा थोड़ी आय वाले लोगों को भरपेट भोजन भी प्राप्त नहीं होता था। दुहरे शासन के उत्पीड़न से उनका जीवन आर्थिक संकट के कारण नरक बन गया था। उनसे बलात् बेकार ली जाती थी। शक्तिशाली तथा धनी लोग उनका शोषण करते थे। उनकी सुन्दर स्त्रियों का अपहरण होता था। घूस खोरी तथा लूट-मार, ठगी की घटनाएँ भी सामान्य थीं। संक्षेप में 'यथा राजा तथा प्रजा' की कहावत रीतिकालीन समाज में चरितार्थ हो रही थी।

2 ⇒ रीतिकाल की सांस्कृतिक परिस्थितियाँ :→

अकबर, जहांगीर एवं शाहजहाँ की उदार नीति के कारण हिन्दू-मुस्लिम संस्कृतियों में जो समन्वय हुआ था वह औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीति के कारण छिन्न-भिन्न हो गया। मन्दिरों, मठों के पीठाधीश भी लोभी प्रवृत्ति के कारण राजाओं और सेठों को गुरुदीक्षा देकर भौतिक लाभ प्राप्त कर रहे थे। रामकृष्ण की लीलाओं में अपने विलासी जीवन की संगति खोजी जा रही थी। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही धर्म के मूलभूत सिद्धान्तों से दूर हटकर कर्मकाण्ड एवं बाह्याडम्बरों तक सीमित रह गए थे। लोग अपनी विलासी मनोवृत्तियों को पूर्ण करने की मनोकामना से हिन्दू मन्दिरों एवं पीरों के तकियों पर जाने लगे थे। धर्म स्थान भ्रष्टाचार एवं पापाचार के केन्द्र बन गये थे। जनता के अन्धविश्वास का लाभ मुल्ला-मौलवी तथा पण्डित-पुरोहित उठा रहे थे। अहिन्दी भाषी प्रान्तों में निवास कर रहे सन्त अब भी नैतिकता के संवाहक बने हुए थे किन्तु उनका प्रभाव उत्तर भारत में न था।

SHOT ON MI A2
MI DUAL CAMERA
2020/4/15 07:0

इस काल में चित्र कला स्थापत्यकला एवं संगीत कला का विशिष्ट स्थान रहा। मुगलों की राजकीय भाषा फारसी थी, किन्तु काव्य भाषा के रूप में ब्रजभाषा प्रतिष्ठित थी। इस युग की चित्रकला राजसी ठाठबाट तथा जनजीवन दोनों का चित्रण करती दिखाई पड़ती है। राजस्थानी शैली एवं कांगड़ा शैली के चित्रों में 'रागमाला' एवं राधाकृष्ण की लीलाओं, लोकगाथाओं, महाभारत की कथाओं का चित्रण हुआ है। शाहजहां के द्वारा बनवाई गई इमारतों में सौन्दर्य का समावेश हुआ है। आगरा का ताजमहल तथा दिल्ली के लाल किले का दीवाने खास इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। कवियों एवं कलाकारों को राज्याश्रय इस काल में खूब मिला, जिससे साहित्य और कला का बहुमुखी विकास हुआ।

=

डॉ० मंजू शुक्ला (सहायक आचार्या)
हिन्दी विभाग, नेहरू ग्राम भारती (मानित) विश्वविद्यालय
प्रयागराज उ० प्र०